and specially compact packed soil can serve the same purpose, and immediately there is a great saving in expenditure.

श्री काशी राम गुप्त : यह जो सेविंग होगी यह क्या हर एक प्रदेश में हो सकेगी और क्या राजस्थान भी इस में शामिल है ?

Shri Humayun Kabir: As I said, it will depend upon the local conditions. For example, if the road is built in an area where you have black cotton soil, obviously, the saving will not be so great. But if you do it in other areas, depending upon the material which is available locally and the method used, the saving may be anything from Rs. 5000 per mile to Rs. 15,000 or Rs. 20,000 per mile.

Dr. L. M. Singhvi: Are these new methods applicable to road construction in mountain regions and in desert areas, and if so, to what extent would there be saving in constructing roads in mountain areas and in desert regions?

Shri Humayun Kabir: I cannot give the details about every area in India. I have given broad indications, and each State will have to work out the actual savings for itself.

Dr. L. M. Singhvi: I want to know whether these new methods are applicable to mountain regions and desert areas.

प्रतियोगी परीक्षाओं में हिन्दी

\+

*६०६. { **श्री भक्त दर्शन :**
श्री प्रकाशवीर शास्त्री :
श्री प० ला० बारूपाल :
श्री कछवाय :
श्री रामेश्वरानन्द :

क्या गृह-कार्य मंत्री २७ मार्च, १९६३ के तारांकित प्रश्न संख्या ६०६ के उत्तर के सम्बन्ध में यह बताने की कृपा करेंगे कि राष्ट्रपति के आदेश के अनुसरण में संघ लोक सेवा आयोग की उच्च परीक्षाओं में हिन्दी एक वैकल्पिक माध्यम के रूप में किस तिथि से लागू की जायेगी ?

गृह-कार्य मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री हजरनवीस) : हिन्दी को वैकल्पिक रूप में माध्यम बनाने के सम्बन्ध में कुछ सवाल अभी भी विचाराधीन हैं। इसलिये शासन कोई निश्चित तिथि बताने में समर्थ नहीं है। तिथि की सूचना उचित समय पर दी जावेगी।

[As certain questions connected with the introduction of Hindi as an alternative medium are still under consideration, Government are not in a position to announce the date from which Hindi will be introduced. A date will be announced in due course.]

श्री भक्त दर्शन : श्रीमन्, स्वर्गीय पंत जी की अध्यक्षता में राजभाषा समिति ने जो सिफारिश की थी उस को हुए कई वर्ष हो गये। उस के बाद राष्ट्रपति जी का आदेश निकले भी काफी समय हो गया, मैं निश्चित रूप से यह जानना चाहता हूं कि आखिर गाड़ी कहां पर अटकी हुई है और किस वजह से इतनी देरी हो रही है ?

श्री हजरनवीस : यह एक जटिल प्रश्न है और इस में बहुत से अन्य प्रश्न उठते हैं और उन के ऊपर विचार चल रहा है। संघ लोक सेवा आयोग के साथ भी परामर्श हो रहा है। विशेष कर इस में एक जटिल प्रश्न यह उठता है कि अगर हिन्दी में प्रश्न-पत्रिका लिखी जाय और अंग्रेजी में लिखी जाय तो उनका आपस का अर्थात् परस्पर अंक मापन कैसा हो, इस जटिल प्रश्न के बारे में सोचा जा रहा है।

श्री भक्त दर्शन : क्या गृह मंत्री महोदय ने जैसा कि व्यक्तित्व परीक्षा यानी पर्सनालिटी टैस्ट के बारे में आश्वासन दिया था, क्या वे इस स्थिति में हैं कि यह ऐलान कर सकें कि देर से देर अगले अधिवेशन तक इस के बारे में भी निर्णय किया जा सकेगा ?

गृह-कार्य मंत्री (श्री नन्दा) : वह तो मैं कह चुका हूं।

श्री प्रकाशवीर शास्त्री : क्या मैं यह जान सकता हूं कि राजभाषा विधेयक में संघ लोक सेवा आयोग के लिए हिन्दी को वैकल्पिक माध्यम बनाने सम्बन्धी धारा को केवल इसलिए नहीं रक्खा गया था कि भूतपूर्व गृह मंत्री स्वर्गीय पंत जी के समय मंत्रिमंडल ने सर्वसम्मति से यह निश्चय कर लिया गया था कि संघ लोक सेवा आयोग में हिन्दी को शीघ्र ही माध्यम बनाया जाय। और अब तक देर करने से विश्वविद्यालयों में भी हिन्दी को माध्यम बनाने के सम्बन्ध में कुछ कठिनाई उत्पन्न हो रही है, यदि हां, तो इस को देखते हुए सरकार कब तक इस पर अन्तिम निर्णय ले सकेगी ? और क्या गृह मंत्री जी इस सम्बन्ध में कुछ निर्देश देंगे ?

श्री हजरनवीस : इस बारे में निर्णय शीघ्र से शीघ्र होगा लेकिन जैसा मैं ने कहा यह एक जटिल प्रश्न है। अब एक विषय उच्च गणित हो सकता है, विज्ञान-शास्त्र हो सकता है, और रसायनशास्त्र हो सकता है, अब अगर उन विषयों की प्रश्न पत्रिकाएं हिन्दी में लिखी जायें तो उन के लिए जो पुस्तकें चाहियें वे पुस्तकें आज उपलब्ध नहीं हैं। हिन्दी में किस तरह से उन को अच्छी तरह से लिखा जाय इस में भी उन को अड़चन होने की सम्भावना है तो इन सब बातों पर विचार चल रहा है और जल्द से जल्द उस बारे में निर्णय किया जायेगा।

Shri Kapur Singh: May I know whether other major languages of India also be accorded a similar optional recognition simultaneously?

Shri Hajarnavis: That suggestion, of course, has been made, but it will present many more difficulties than even the introduction of Hindi.

श्री रामसेवक यादव : अभी मंत्री जी ने कहा कि हिन्दी में अच्छी पुस्तकें उपलब्ध नहीं हैं तो इस दिशा में सरकार की ओर से क्या किया गया या अभी क्या किया जा रहा है ?

श्री हजरनवीस : हिन्दी में अच्छी से अच्छी किताबें जल्द से जल्द तैयार करने के लिए कोशिश हो रही है।

श्री भागवत झा आजाद : चूंकि हिन्दी का माध्यम एच्छिक होगा इसलिए हिन्दी में अच्छी पाठ्यक्रम सम्बन्धी पुस्तकों के अनुपलब्ध रहने से एग्जामिनीज को कठिनाई नहीं होनी चाहिए इसलिए मंत्री महोदय ने उस तरह का उत्तर कैसे दिया ?

Since this medium will be optional, the non-availability of text-books will not stand in the way of examinees. So how does he give that answer?

Shri Hajarnavis: But quite possibly the examinees may not be the best judges of what is good for them.

Primary Education in U.P.

\+

*610. **Shri Sidheshwar Prasad:**
Shri P. R. Chakraverti:
Shri Mohan Swarup:
Shri Sarjoo Pandey:

Will the Minister of **Education** be pleased to state:

(a) whether the Standing Committee of the Central Advisory Board of Education has estimated that about 45 lakhs of children of the 6—11 age group will not be attending schools in U.P. at the end of Third Plan period;

(b) the steps taken by the Union Government in helping the U.P. Government in solving this extremely formidable task;